पूर्ण साक्षर गांवों के बीच दो दिन

जयप्रकाश मानस
जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी, रायपुर

सामान्य नागरिक की तरह मैं भी सोचा करता था कि प्रौढ़ शिक्षा मात्र कागजी आंकड़ों का खेल है। इसके सार्थक परिणाम नहीं दिखाई देते। यह मेरी संकुचित भावना का परिणाम था। विवेकहीन सोच थी जो अब दिमाग से निकल गई है।

कामेपुर ने इतिहास रचा

कौन कहता है कि आदिवासी पिछड़े और पुरानी परंपराओं से चिपके जंगलों में छिपे हैं। वे अब विकास की मुख्यधारा में शामिल हो जाना चाहते हैं। उन्हें अब कोई शोषणकारी शक्तियां या परिस्थितियां नहीं रोक सकतीं। गरियाबढ से लगभग 35 किलोमीटर दूर गांव कामेपुर पूर्ण आदिवासी गांव है। यहां नेताम और गोंड सदियों से रहते हैं। सघन वन और पहाड़ियों से घिरा यह गांव पर्यटन स्थल से कम नहीं जो अब पूर्ण साक्षर आदिवासी गांव के रूप में भी अपना नाम फैला रहा है।

जिले में साक्षरता अभियान शुरु होते ही कामेपुर के ग्राम प्रधान ने संकल्प लिया पूरे गांव को साक्षर बनाने का। इसके परिणाम-स्वरूप अब गांव की 36 महिलाएं व 48 पुरुष न केवल पढ़ना-लिखना जान गए हैं, बल्कि बुनियादी सुविधाओं के लिए भी अपनी बात संबंधित अधिकारियों के सामने रखने लगे हैं।

हम गांव में भरी दोपहरी में पहुंचे थे, पर खबर पाते ही सब ग्रामवासी स्वयं इकट्ठा हो गए। हमारे

एक प्रश्न के उत्तर में एक नवसाक्षर महिला नकछेड़ीन बाई ने बताया कि **''साक्षर होय के बाद हमन अब रामायण पढ़ लेथन, हिसाब-किताब की जानकारी होई लगीस है।''**

''हमन साक्षर होये हन तब हमनला ये ज्ञान होगीस है कि हमर लोग लड़का मन ला पढ़ना जरूरी हावे। हमर गांव के उन्नति तमें हो ही जब हम लोगन के लड़का पढ़े-लिखे होही।''

255 की आबादी वाले गांव को पूर्ण साक्षर बनाने में कठिनाई निश्चित रूप से आई। सब लोगों ने मिलकर पारंपरिक शैली में कथा-कहानियों के जरिए निरक्षरों को साक्षरता अभियान से जोड़े रखा।

गोंड आदिवासी दिन भर खेत-खलिहान में जी तोड़ मेहनत करते या जंगल में ''कांदा-करील'' खोजते। शाम होते ही साक्षरता केंद्रों पर पहुंच जाते और देर रात तक अक्षर ज्ञान प्राप्त करते। आदिवासी अब गांव में पानी की व्यवस्था के लिए बोरिंग और नलकूप की मांग करने लगे हैं।

इनके घर अब ज्यादा साफ दिखाई देते हैं। गांव की लगभग सब महिलाओं ने परिवार कल्याण व टीकाकरण को जरूरी बताया।

गांव की एक सयानी महिला जैरकी ने जागरूकता का परिचय दिया जो साक्षरता का ही परिणाम था। उसने गुस्से में कहा कि **''मैं कलेक्टर ला दू ठन चिट्ठी लिख डारेंव हंव। एक ठन बोरिंग हमर गांव में नई लगे सकीस है।''**

बदलाव रहन-सहन में

गांव नवागढ़, खम्हारीपारा के 40-वर्षीय अच्युत बिहारी ने साक्षरता अभियान से आए बदलाव को स्वीकारा। उन्होंने बताया कि नवसाक्षर महिलाएं अपने घर-द्वार साफ रखने लगी हैं। वे अब तालाब और पोखर के पानी के बजाए नलकूप का पानी इस्तेमाल करने लगी हैं। गांव में छुआछूत की भावना गलत समझी जाने लगी है।

खेतिहर मजदूर मबूराम यादव ने बतलाया कि वह पहले लिखना-पढ़ना नहीं जानता था। अब हस्ताक्षर कर लेता है और किसी भी कागज पर अंगूठा चस्पा नहीं करता। वह अपने इकलौते बेटे को मैट्रिक तक पढ़ाना चाहता है। साक्षरता के बाद स्वयं उसमें पढ़ने की ललक बढ़ी है।

अंधविश्वास गलत है

गांव सढोली के कोटवार ने बताया कि साक्षरता अभियान के बाद टोनही, मंत्र-जंत्र, छुआछूत जैसे अंधविश्वासों के प्रति लोगों की आस्था खत्म होने लगी है। गांव के जनशिक्षण निलयम केंद्र में जाकर नवसाक्षर स्वास्थ्य, पर्यावरण, टीकाकरण, धार्मिक, ऐतिहासिक व मनोरंजन से संबंधित छोटी-छोटी किताबें पढ़ने लगे हैं। वे अब व्यापारी के दुष्चक्र से भी निकलना चाहते हैं। अपने गांव की समस्याओं के निराकरण के लिए वे सोचने लगे हैं। गांव में पढ़ने-लिखने के बाद रामायण और भागवत पढ़ने वालों की संख्या बढ़ी है।

जब मैं दल के साथ लौटने लगा तो गांव बेदकूरा के बच्चों, बूढ़ों और महिलाओं ने ''जय अक्षर'' कहकर विदाई दी। पता चला कि यह अभिवादन जिलाधिकारी श्री देवराज बिरदी ने साक्षरता दौर के समय लोगों को सिखाया था।

इसमें दो मत नहीं कि यदि हम तन, मन और लगन से साक्षरता अभियान गांव-गली तक पहुंचा सकें तो व्यापक और ठोस परिणाम देखने को मिलेंगे। □